# जनजाति महिला विकास संस्थान

## वार्षिक गतिविधि प्रतिवेदन

( समेकित )

## ANNUAL ACTIVITY REPORT

(Consolidated)

(2022 - 2023)

जनजाति महिला विकास संस्थान

अक्रमुः रूचेजनन्त सूर्यम्

# बड़ी कहानी ''छोटी'' की

कहानी आज के सत्तर वर्ष पहले की है।
राजस्थान के एक जनजातीय समाज से आने वाला एक अनपढ़ गरीब किसान एक दिन अपनी पाँच वर्ष की नन्ही बेटी का हाथ थाम उसे स्कूल ले गया। सबने कहा ,
"लड़कियाँ भी कहीं पढ़ती है ?"
वह बोला , "यह पढ़ेगी, मैं इसके भाई के साथ इसे भी पढ़ाऊँगा।"
पिता ने हाथ पकड़ा था, कोई रोकता भी कैसे।
स्कूल में जा कर कहा, "इसका दाखिला करवाना है, यह भी पढ़ेगी।"
शिक्षिका ने धूल धूसरित पाँव लिए खड़ी बच्ची और घुटने तक की धोती और एक मटमैले कुर्ते में खड़े अनपढ़ किसान पिता को ऊपर से नीचे तक देखा और बोली, " नाम क्या लिखूँ इसका ?"
पिता बोला, "छोटी"
शिक्षिका कलम नीचे रख कर बोली, "यह कोई नाम है? दूसरा कोई नाम बताओ ।"
अनपढ़ किसान तुरन्त ही क्या नामकरण करता, घर में सबसे छोटी थी तो छोटी ही बुलाते थे सब।
बोला,"जो बगल वाली लड़की का है, वही नाम इसका रख दो।"
सर हिलाते हुए शिक्षिका ने कहा, "फीस दे दो इसकी"
रुपए थे नहीं तो ''छोटी'' को वहीं छोड़ वापस घर गया और कंधे पर एक बोरी अनाज लाद लाया।
शिक्षिका के टेबल के पास गेहूं की बोरी पटक कर बोला, "यही है मेरे पास। हर साल जब पैदा होगी खेतों में तब दे जाऊँगा मास्टरनी जी, बस इसे भी पढ़ा दो। ससुराल जाएगी तब चिट्ठी–पत्री लिख दिया करेगी।"

छोटी को नया नाम मिल गया था –"जसकौर"

"छोटी" की यह यात्रा एक इतिहास बनी जब वे इस एक बोरी अनाज की फीस के बल पर मीना जनजातीय समाज की,
पहली दसवीं पास बालिका,
पहली **स्नातक**,
पहली **स्नातकोत्तर**,
पहली **राजकीय शिक्षिका**,
पहली **प्रधानाध्यापिका**,
पहली **परियोजना अधिकारी**
पहली **उपनिदेशक महिला शिक्षा** और
राजस्थान के जनजातीय मीना समाज से आने वाली पहली महिला **लोकसभा सांसद**
एवं इसके पश्चात भारत सरकार में **''महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री''** बनीं।

**यह कहानी है "श्रीमती जसकौर मीना" की।**
जनजातीय समाज से आने वाली वे **पहली महिला हैं जिन्होंने अपने समाज की बालिकाओं और महिलाओं को शिक्षित करने के लिए जीवन समर्पित किया।**

**"अनाज के बदले शिक्षा"** का यह मूल मंत्र जो उनके पिता ने चरितार्थ कर दिखाया था वही मूलमंत्र उनके द्वारा स्थापित **जनजाति महिला विकास संस्थान** की नींव का पत्थर साबित हुआ जिसके आधार पर ग्राम मैनपुरा एवं उसके आसपास के कई गाँवो ने अनाज, रेत, पत्थर और यदि कुछ और संभव ना भी हो पाया तो अपना श्रमदान दे कर जसकौर जी के प्रति पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए सम्मिलित सहयोग से संस्थान के अन्तर्गत वर्ष 1995 में **"ग्रामीण महिला विद्यापीठ"** की स्थापना की।
आस–पास का हर किसान अपनी बेटी का हाथ थाम उसे ज्ञानार्थ प्रवेश दिलाने यहीं लाता है ताकि वह भी **"छोटी से जसकौर"** तक का सफर कर देश व समाज की सेवार्थ यहाँ से प्रस्थान करे।
शिक्षा का प्रकाश अन्धकार में भी मार्गदर्शित करता है, कभी क्षीण नहीं होता।
शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण और उन्नति की राह पर आगे बढ़ना सभी बालिकाओं का अधिकार है जिसकी प्राप्ति के लिये बालिकाओं का मार्ग प्रशस्त करना हम सभी का उत्तरदायित्व है।
यही जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है।

## निदेशक की कलम से...

**प्रिय अभिभावक गण, मित्रगण, शुभचिंतक बंधु एवं हमारे देश का भविष्य हमारे विद्यार्थीगण।**

1995 में हमारी संस्थापिका परम् आदरणीय मां श्रीमती जसकौर मीणा जी के अथक प्रयासों से, मात्र 5 बालिकाओं के साथ मंदिर के प्रांगण में प्रारंभ हुआ हमारा ग्रामीण महिला विद्यापीठ आज अपने 26 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है।

5 बालिकाओं व दो शिक्षिकाओं के साथ प्रारंभ हुई यह यात्रा आज पांच संस्थाओं के साथ शिक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करती हुई, आपके सहयोग से क्षेत्र में बालिका शिक्षा के प्रचार–प्रसार द्वारा बालिकाओं को भविष्य में श्रेष्ठतम अवसर प्रदान करने के लिए वचनबद्ध है।

विगत 26 वर्षों की यात्रा अभी लक्ष्य पर पहुंच गई हो, ऐसा नहीं है। दिन प्रतिदिन हम स्वयं को परखते हैं, नित नवीन उत्साह के साथ हम आगे की यात्रा की तैयारी करते हैं। हम नए विचार, नवाचार सीखते हैं ताकि अपनी संस्था में प्रवेश लेने वाली हर बालिका को नई ऊंचाइयां छूने के लिए प्रेरित कर सकें, उसे नित नवीन सिखा सकें। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का पालन करते हुए हमारी बालिकाएं अपनी सोच को विश्वव्यापी बना सकें, उनकी वैचारिक शक्ति को धार लग सके, यही हमारा उद्देश्य है और यही संभवतः शिक्षा का मूलभूत अर्थ भी है। ज्ञान तब फलीभूत होता है जब वह ज्ञान पर्याप्त करने वाले में विश्लेषणात्मक शक्ति पैदा कर सके। सद् विचार, सद् मूल्यों पर आधारित सोच के साथ सकारात्मक विश्लेषण विश्व में आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह शक्ति उत्पन्न करने का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत स्कूल शिक्षा ही है।

हमारी बालिकाओं ने संस्था से शिक्षा ग्रहण कर विभिन्न पदों को सुशोभित किया है। अनेकानेक बार संस्था और अपने शिक्षकों को गौरवान्वित किया है। शिक्षा उन पंखों की भांति है जो उड़ान की क्षमता प्रदान करते हैं। ग्रामीण महिला विद्यापीठ का परिसर प्रत्येक बालिका के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है ताकि वह भविष्य में अपनी उड़ान को सुनिश्चित कर सके।

प्रकृति की गोद में बसे विद्यापीठ प्रांगण में, हर प्रकार के प्रदूषण से दूर वातावरण स्वाभाविक रूप से शिक्षा के अनुकूल है। सांस्कृतिक व रचनात्मक गतिविधियों द्वारा बालिकाएं उनके भीतर छिपे गुणों व प्रतिभाओं के प्रति जागरूक बनती हैं। कार्यों को कैसे एक दूसरे से सहयोग लेकर व देकर उत्कृष्ट ढंग से निष्पादित किया जाता है इसका अभ्यास उन्हें एक साथ, एक जैसे वातावरण में, एक जैसी दिनचर्या का निर्वहन करके प्राप्त होता है। खेलकूद, प्रातः–संध्या वंदन, एक साथ परिवार की तरह बैठकर शुद्ध सात्विक भोजन छात्रावास की विशेषताएं हैं। साहित्य चर्चाओं, संगोष्ठियों, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं के साथ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बालिकाओं की सतत भागीदारी रहती है।

संस्था स्थानीय ग्रामवासियों, हमारे संरक्षक गाँव मेनपुरा के समस्त ग्रामवासियों, सूरवाल थाना पुलिस एवं समस्त अभिभावक गणों का सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रेषित करती है।

बालिकाओं की सुरक्षा हमारी सबसे अहम प्राथमिकता है। अभिभावकों से निरंतर संपर्क हम बनाए रखते हैं और साथ ही भारत का भविष्य इन बालिकाओं के शिक्षण, पोषण व संवर्धन में अभिभावकों के मार्गदर्शन एवं सहयोग की निरंतर अपेक्षा रखते हैं।

इस बार हम विशेष धन्यवाद प्रेषित करते हैं हमारे जर्मनी से पधारे संस्थान के शुभचिंतक और मेहमान श्री डीटर एवं श्रीमती एलिजाबेथ गुटमन्न का जिन्होंने एक अनाथ बालिका की पढ़ाई की संपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन माता–पिता की भाँति करने का निर्णय लिया। वे बालिका की पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ले कर सदैव संस्था मैनेजमेंट एवं स्वयं बालिका से और उसके शिक्षक गणों से संपर्क में रहते हैं।

निकट भविष्य में वे विद्यापीठ में एक कंप्यूटर लैब की व्यवस्था करना चाहते हैं ताकि बालिकाएँ तकनीकी शिक्षा में अग्रणी रह सकें और इन्हें उन परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़े जो उन्होंने कोविड महामारी के समय अनुभव कीं थीं।

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के ऐसे सकारात्मक प्रयास ही हमारा मनोबल बढ़ाते हैं। यह वह यज्ञ है जिसमें संपूर्ण विश्व को एक हो कर भागीदारी देनी होगी। एक साथ, एक जुट हो कर सहायता करनी होगी।

अशिक्षा को दूर भगा कर ही विश्व की प्रगति संभव है।

आइए साथ मिलकर नवभारत का निर्माण करें। एक ऐसा भारत जिसकी बालिका की सबसे बड़ी ताकत उसका बुद्धि बल हो, उसकी शिक्षा हो। वह मां सरस्वती, मां दुर्गा एवं मां लक्ष्मी का सम्मिलित अवतार हो। वह स्वयं में परिपूर्ण हो। वह स्वयं का सम्मान करना सीखे और हम सबका अभिमान बन सके।

आपके सहयोग व शुभकामनाओं की अपेक्षा में

**रचना मीना**
निदेशक,
ग्रामीण महिला विद्यापीठ मैनपुरा
सवाई माधोपुर

| | |
|---|---|
| **संस्था का नाम** | **जनजाति महिला विकास संस्थान** |
| **पता** | **ग्राम – मैनपुरा, सवाई माधोपुर–322027 ( राजस्थान )** |
| **रजि. क्रमांक** | **56/स.मा./1993–94** |
| **लोगो** | |
| **ध्येय वाक्य** | **''अक्रमु रुचेजनन्त सूर्यम'' (अपने सूर्य आप बन जाओ)**<br>– शिक्षा का प्रकाश ही ग्रामीण क्षेत्र की, जनजातीय समाज से आने वाली बालिकाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है ऐसा हमारा विश्वास है।<br>क्यों की विद्या ही वह पूँजी है जिसे बालिकाओं की उस धरोहर के रूप में दिया जा सकता है जिसे उनसे कोई ना छीन सकता है ना बाँट सकता है।<br>**न चौरहार्यं न च राजहार्य, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।**<br>**व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।**<br>यही वह प्रकाश है जो कभी क्षीण नहीं होता।<br>**"शिक्षा का सूर्य कभी अस्त नहीं होता"** |
| **प्रमुख उद्देश्य** | ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं के लिए शिक्षा सुलभ करवाना और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना कि कोई भी बालिका किसी आर्थिक अभाव या विपरीत परिस्थितियों के चलते अपनी स्कूल शिक्षा बीच में ना छोड़े।<br>बालिका के शिक्षित होने से ही भविष्य में जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास संभव है।<br>"सशक्त नारी, सशक्त भारत" नारे की सफलता "शिक्षित बालिका" के मूल मंत्र में छिपी हुई है। एक शिक्षित और जागरूक बालिका ही भविष्य में सशक्त और स्वावलंबी नारी बन सकती है।<br>जनजाति महिला विकास संस्थान की स्थापना के पीछे यही उद्देश्य निहित है और जनजाति महिला विकास संस्थान इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयासरत रहेगा।<br>बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन ही जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है। |
| **परिचय एवं पृष्ठभूमि** | • **राजस्थान के सवाईमाधोपुर** जिले के छोटे से गाँव **मैनपुरा** स्थित मंदिर के प्रांगण में मात्र पाँच बच्चियों से प्रारंभ हुआ **जनजाति महिला विकास संस्थान** द्वारा स्थापित स्कूल **"ग्रामीण महिला विद्यापीठ"** स्वयं राजस्थान के ग्रामीण किसान और जनजातीय पृष्ठभूमि से आने वाली हमारी संस्थापिका श्रीमती जसकौर मीना द्वारा **वर्ष 1993** में स्थापित किया गया ,जो जनजातीय समाज की **पहली शिक्षित महिला** थीं। उसी शिक्षा के बल पर वे अपने समाज से सरकारी सेवा में आने वाली पहली शिक्षिका बनीं और निरंतर आगे बढ़ते हुए आगे चल कर लोकसभा सांसद बन संपूर्ण राजस्थान क्षेत्र से प्रथम महिला केंद्रीय मंत्री के पद तक पहुँची और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का कार्यभार सम्भाला। |

| | |
|---|---|
| **परिचय एवं पृष्ठभूमि** | • जनजातीय समाज से आने वाली बालिकाओं के जीवन में शिक्षा से सकारात्मक परिवर्तन लाने में विद्यापीठ ने जो महत्वपूर्ण भूमिका विगत 27 वर्षों से निभाई वह उन्हीं की दूरगामी सोच का परिणाम है।<br>• इस क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा का प्रतिशत मात्र **11 प्रतिशत** था। स्थानीय समाज में बालविवाह, बालश्रम जैसी कुरीतियाँ व्याप्त थीं।<br>• गत 27 वर्षों में संस्था से लगभग 22–25000 बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर चुकी हैं, जिनमे से लगभग 80 प्रतिशत बालिकाएँ आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आती थीं।<br>• विद्यापीठ में प्रतिवर्ष अति निर्धन वर्ग की लगभग 25 से 30 बालिकाएँ निःशुल्क अध्ययन करती हैं, इस वर्ग से आने वाले आवेदनों की संख्या प्रतिवर्ष लगभग 80 से 100 तक होती है जिन्हें निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना जनजाति महिला विकास संस्थान के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।<br>• जनजाति महिला विकास संस्थान की स्थापना के बाद से ले कर आज तक हालाँकि बालिका शिक्षा के प्रतिशत में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है आज सवाईमाधोपुर क्षेत्र में 90.08% पुरुष साक्षरता एवं 67.98% महिला साक्षरता है किंतु महिला साक्षरता का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में और भी सोचनीय है। महिला साक्षरता दर पुरुष साक्षरता दर से कम होना इस बात का द्योतक है कि बालिका शिक्षा के क्षेत्र में अभी सतत् एवं क्रांतिकारी प्रयास करने की आवश्यकता है।<br>• संस्थान ने स्कूल शिक्षा तक ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं को खींच लाने की जगह स्कूल शिक्षा को उनके दरवाजे तक पहुँचा कर उसे पिछड़े और किसान परिवारों के लिए सहज और सुलभ बनाने के प्रयास में सफलता पाई है।<br>• अधिकाधिक निर्धन वर्ग की बालिकाओं की निःशुल्क किंतु उत्तम, संस्कार आधारित किंतु वैश्विक और सर्वांगीण विकास का मार्ग दिखाने वाली शिक्षा की व्यवस्था करना जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है और यही हमारा परिचय है। |

**विद्यापीठ निर्माण की नींव डालने में जन सहयोग एवं प्रारंभिक वर्ष–1995**

# वार्षिक गतिविधि रिपोर्ट

## वर्ष 2022–23

- CSR फाइल बनाना।
- संस्थान के SOP पर मीटिंग और कार्यभार का स्पष्ट और योग्यतानुसार वितरण।
- सोशल मीडिया एवं वेबसाइट को और स्ट्रॉग बनाने के लिए एक स्टाफ की नियुक्ति की।
- Rajasthan Electronics & Instruments Limited (REIL) से संपर्क एवं CSR प्रोजेक्ट फाइल देना।
- IDBI बैंक में CSR के लिए आवेदन करना
- स्कूलों के लिए BALA एक्टिविटी के अंतर्गत दीवार पर चित्र एवं जानकारी देने वाले चार्ट का पेंटिंग कार्य
- कैंटीन की व्यवस्था पुनः चालू करना
- परिसर के बाहर मोबाइल एवं कैमरा निषेध के सूचना बोर्ड
- बाउंड्रीवाल की रिपेयर की सख़्त आवश्यकता – फंड्स पर चर्चा
- बरसात के दौरान कॉलेज परिसर में पानी इकट्ठा होने की समस्या के समाधान पर विचार–भामाशाहों से संपर्क–कॉलेज में पेवर टाइल बिछवा कर पत्थर की बेंच लगवाई गईं और पेड़–पौधे लगा कर समस्या का निराकरण किया गया ताकि फिसलन से बचा जा सके और बच्चियों को प्राकृतिक वातावरण में पढ़ने की जगह मिल सके।
- लाइब्रेरी में किताबों की संख्या बढ़ाना, साहित्यिक किताबों को अधिकाधिक शामिल करना।

**कॉलेज प्रांगण में पहले पानी के भराव से फिसलन बनी रहती थी**

- शिक्षकों का **रीडिंग क्लब** बनाने पर विचार।
- बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में शिक्षकों को जागरूक करना – सेमिनार का आयोजन
- कुछ टॉयलेट की छतों में टूटन का खतरा होने के कारण उन पर ताला लगवाना
- वृक्षारोपण से परिसर का सौंदर्यीकरण – **एक कक्षा –एक पेड़ / एक शिक्षक – एक पेड़।**
- पक्षियों के जल और चुग्गे का प्रबंधन – **पक्षी रेस्टोरेंट** नाम से ताकि बालिकाओं में जागरूकता बढ़े

**छात्राओं की सुविधा के लिए कॉलेज प्रांगण को सुविधाजनक बना कर उसका सौंदर्यीकरण किया**

- कोचिंग क्लास की व्यवस्था
- गत वर्ष के परीक्षा परिणामों की समीक्षा। कोविड काल के शिक्षा पर पड़ने वाले असर के दूरगामी परिणामों पर विचार
- परिसर में स्थित पहाड़ी का नैसर्गिक सौंदर्य बचाते हुए उस पर एक स्वाध्याय केंद्र बनाने पर विचार
- हॉस्टल में एडमिशन बढ़ाने की रणनीति पर विचार ताकि दूरस्थ क्षेत्रों की बालिकाऐं भी शिक्षा का लाभ ले सकें
- एक बड़े TV की व्यवस्था
- CCTV कैमरों की संख्या बढ़ाना
- खेल के उपकरण बढ़ाने पर विचार ताकि छात्राओं की रुचि नए खेलों के प्रति बढ़ सके–जब छात्राएँ अपनी शारीरिक शिक्षिका **सीमा सेन** के प्रोत्साहित करने पर लैब के दो बड़े टेबल जोड़ कर उन पर TT की प्रैक्टिस करने लगी और इस जुनून से वो जिला स्तर पर जीत कर आईं तब से सभी बालिकाओं में TT के खेल के प्रति रुचि बढ़ी।
- सोशल मीडिया के द्वारा इस उपलब्धि का प्रसार करने से एक भामाशाह ने संस्था की बालिकाओं के लिए TT टेबल दिया।
- बालिकाओं के लिए नए ट्रैक सूट और स्पोर्ट्स किट संस्था द्वारा खरीदे गए ताकि वे आत्मविश्वास से खेल शिविरों में जा सकें।
- स्थानीय जन समुदाय में जनजाति महिला विकास संस्थान के कार्यों एवं उपलब्धियों का प्रचार प्रसार करने के लिए कुछ वालंटियर युवाओं से संपर्क किया ताकि वंचित वर्ग की होनहार बालिकाओं की शिक्षा में सहायता की ओर समाज को प्रेरित किया जाए।
- एक केन्द्रीकृत RO वाटर सिस्टम लगवाने पर विचार किया और एस्टिमेट प्रपोजल लिया।
- पुराने फर्नीचर की मरम्मत का कार्य करवा कर उसे उपयोग लायक बनाया गया।
- प्रत्येक कक्षा में लाइट और पंखों की संख्या बढ़वाई गई।
- अभिभावकों के संवाद बढ़ाने, स्थानीय प्रशासन के साथ सेमिनार, प्रदर्शनियाँ व अन्य जागरूकता बढ़ाने संबंधित पठन सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु संपर्क किया
- समाज कल्याण विभाग द्वारा तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। छोटे छोटे क्विज और प्रतियोगिता आयोजित हुईं जिनमे भाग लेने पर छात्राओं को पारितोषिक वितरित किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।
- जिलाधीश श्री सुरेश कुमार ओला जी द्वारा "भविष्य की उड़ान" वर्कशॉप का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के लिए किस प्रकार तैयारी की जानी चाहिए इस पर उन्होंने छात्राओं से विस्तृत चर्चा की।
- उनके इस उद्बोधन और मार्गदर्शन को संस्था ने संकलित कर "भविष्य की उड़ान" पत्रक के रूप में छपवाया जिसकी प्रतियाँ वितरित की गईं ताकि अन्य छात्र–छात्राएँ भी लाभान्वित हों।

**पर्यावरण की रक्षा– "पक्षी रेस्टोरेंट"**

**भविष्य की उड़ान –**
**जिला कलेक्टर श्री सुरेश कुमार ओला द्वारा**

- कॉर्डिनेटर (समन्वयक) के पद पर **श्रीमती नीलम नैथानी** की नियुक्ति सर्वसम्मति से की गई।
- कामकाजी महिला छात्रावास कमेटी के गठन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के एक प्रतिनिधि की नियुक्ति और छात्रावास की विज्ञप्ति जारी की गई।
- बालिकाओं में पढ़ाई के प्रति रुचि और अच्छा रिजल्ट प्राप्त करने के लिए रुझान बढ़ा है। शिक्षकगणों ने इस संबंध में बहुत समर्पण से कार्य किया ।
- पहाड़ी पर पुरानी टंकियों से लगातार रिसते पानी से मार्ग में कीचड़ होता था जिसके कारण आने जाने में असुविधा होती थी। हमने समस्या में समाधान खोजने का प्रयास किया और एक छोटा पौंड खोद कर पानी उसने इकट्ठा होने दिया जिसमें आज लगभग 5 से 10 प्रकार के कमल और कुछ दुर्लभ वैरायटी के जलीय पौधे पनप रहे हैं। इनकी सुंदरता हमें प्रसन्नता देने के साथ हमेशा आभास करवाती है की परिस्थिति कितनी ही विपरीत हो, आशा और विश्वास नए मार्ग बना ही लेता है।
- ये **कमल कुंड** हमारे प्राचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा जी** की विशेष देखरेख में अपनी उपयोगिता और सुंदरता बनाए हुए है।

**कमल कुंड**

## चुनौतियाँ

- संस्थान एक पहाड़ी की तलहटी में स्थित होने के कारण जमीन पथरीली है जिससे किसी भी प्रकार का निर्माण, रखरखाव एवं वृक्षारोपण का कार्य भी बिना मशीनरी की मदद के संभव नहीं हो पाता और दोगुना खर्च आता है।
- दीवारें पुरानी होने के कारण दीवार लेखन, BALA एक्टिविटी आदि का क्रियान्वयन उतना सुचारू रूप से नहीं हो पाता।
- बाउंड्री वाल की रिपेयर एवं सुरक्षा के लिए तारबन्दी का खर्च लगभग 1000000 रुपए होने से उसके एक गिरे हुए भाग की मरम्मत ही संभव हो सकी। तार ना लगे होने से कई जगह से कुत्तों का प्रवेश हो जाता है जिससे बालिकाओं और स्टाफ के सदस्यों को कठिनाई तो होती ही है, साथ ही कुत्तों के काट जाने का खतरा बना रहता है।
- कुछ टॉयलेट बंद होने से बालिकाओं को समस्या का सामना करना पड़ा। किंतु पुराने टूटे हुए ढाँचे की मरम्मत कई बार करवा देने के कारण अब संभव नहीं है। नए टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण का खर्च वहन करना संस्था के लिए संभव नहीं है।
- अलग अलग प्रतिष्ठानों और व्यावसायिक वर्ग में भेजे गए CSR प्रपोजल का कोई उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।
- अधिकांश ग्रामीण बालिकाओं के परिजनों के रोजगार कोविड के दौरान छूट जाने से उनकी फीस या तो नहीं आई या आंशिक रूप से आई।
- बालिकाओं की शिक्षा को आज भी ग्रामीण समाज में अनिवार्य नहीं माना जाता। आर्थिक तंगी का सामना करने पर सर्वप्रथम लड़कियों को पढ़ाई से वंचित करवा दिया जाता है ताकि वे घरेलू कार्यों में हाथ बटाएँ और खेतों पर मजदूर लगाने का खर्च कम किया जा सके। इसी कारण इस वर्ष स्कूल आने के लिए कई बालिकाओं को कठिनाई या परिवार के असहयोग का सामना करना पड़ा।

## समाधान

- वही पेड़ लगाने का निर्णय लिया गया जो पथरीली और कम पानी की जमीन में पनप सकें। जैसे चंपा, खेजड़ी, नीम, पीपल और बोगनविलिया आदि।
- सोशल मीडिया के द्वारा सहयोग की समय–समय पर अपील की गई।
- सबसे अधिक ऊर्जा इस मिशन पर लगाई गई कि कोई भी छात्रा फीस ना दे पाने के कारण स्कूल आने से वंचित ना हो जाए। उनकी पूर्णतः निःशुल्क पढ़ाई की व्यवस्था के साथ उनकी यूनिफार्म एवं किताबों व स्कूल आवागमन के खर्च को भी संस्था द्वारा वहन किया गया ।

**समाज कल्याण विभाग द्वारा आजादी के रंग पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता**

- बैठक कर आर्थिक रूप से संपन्न और संस्था से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों से प्रति व्यक्ति एक बालिका की पढ़ाई का खर्च वहाँ करने की अपील की गई जिसने हमे आंशिक किंतु अतिमहत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई जब **8 लोगों ने मिल कर 12 अनाथ और आर्थिक रूप से कमजोर बालिकाओं की पढ़ाई का खर्च उठाया।**
- संस्था को एक मार्ग मिला और आशा की किरण दिखाई दी। हमने व्यक्तिगत संपर्क एवं सोशल मीडिया के माध्यम से अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने का प्रयास किया।
- इन समस्त व्यवधानों के बाद भी हमारी संस्था में पढ़ने वाली बालिकाओं ने **श्रेष्ठतम परीक्षा परिणाम** दिए और अपना आत्मविश्वास कम नहीं होने दिया।
- यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि रही।

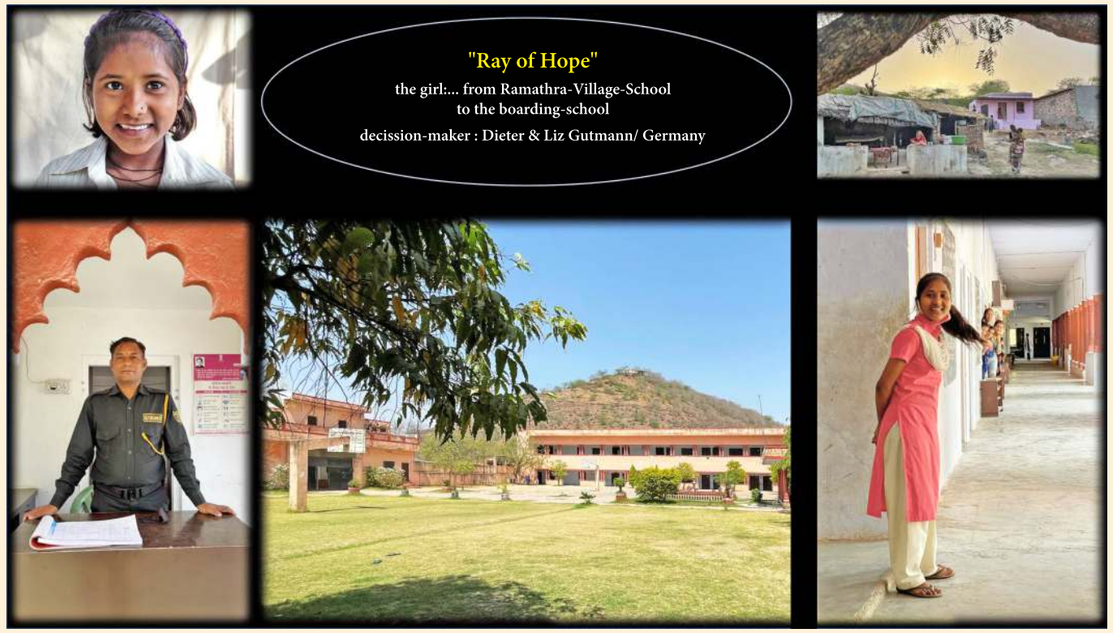


" Our Visit at your school was a real highlight for us;
and we like to open now a permanent exchange of meanings.

Special greetings to our girl as well ! hopefully she is on a good learning path !"

**Dieter and Liz Gutmann**
(From their e-mail)

We are forever thankful to all who have ever supported us in our journey towards empowering girls through education.

This year our special thanks goes to respected Dieter and Liz Gutmann for supporting Muskan Bhartiya's School Education and for taking out time to personally visit her and our institution. They are setting a great example of **"Vasudhaiva Kutumbakam".**

**अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।**
**उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।**

बालिका शिक्षा का विस्तार ही हमारी संस्था का लक्ष्य है। अज्ञान के विरूद्ध इस संघर्ष में,
बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए सर्व समाज का सहयोग अपेक्षित है।

– विद्यापीठ परिवार

**शिक्षित बालिका देश के उज्जवल भविष्य की नींव है।**

" ज्ञान ही शक्ति है।
जानकारी स्वतंत्रता है।
प्रत्येक परिवार और समाज में शिक्षा,
प्रगति का आधार है। "

**– कोफी अन्नान**

*Photo Credits -*
**Dieter and Liz Gutmann** (Germany)

# गतिविधियाँ

विजिट

अभिभावक सम्मान

विशेषज्ञों द्वारा कार्यशाला

मेला और दुकान

## विद्यापीठ के समाचार

# कार्यकारिणी की सूची / EXECUTIVE COMMITTEE LIST

( सहकारिता विभाग )

पं. संख्या / REG. NO.- 56/SAWAIMADHOPUR/1993-94 दिनांक / Date 23-06-2021

| Sr. No. | Name | Post |
|---|---|---|
| 1 | Jaskaur Meena | Chairman/President |
| 2 | Jamwati Chaturvedi | Secretary |
| 3 | Rachna Meena | Treasurer |
| 4 | Sarswati Amma | Member |
| 5 | Riya Sood | Member |
| 6 | Malti Sharma | Member |
| 7 | Pinky Meena | Member |
| 8 | Meera Saini | Member |
| 9 | Rajyashree Joshi | Member |
| 10 | Chanda Jain | Member |
| 11 | Kamala Barwal | Member |
| 12 | Sushila Vijay | Member |
| 13 | Archana Meena | Member |
| 14 | Ishita Kumar | Member |
| 15 | Mithi Devi | Member |
| 16 | Mithlesh Goyal | Member |
| 17 | Sona Kanwar | Member |
| 18 | Sushma Sharma | Member |
| 19 | Preeti Mahawar | Member |
| 20 | Neelam Kumari | Member |
| 21 | Rekha Mangal | Member |
| 22 | Kailashi Bai | Member |
| 23 | Ritasingh | Member |
| 24 | Vimlesh Jangid | Member |
| 25 | Phoolwati Meena | Member |
| 26 | Neha Jain | Member |

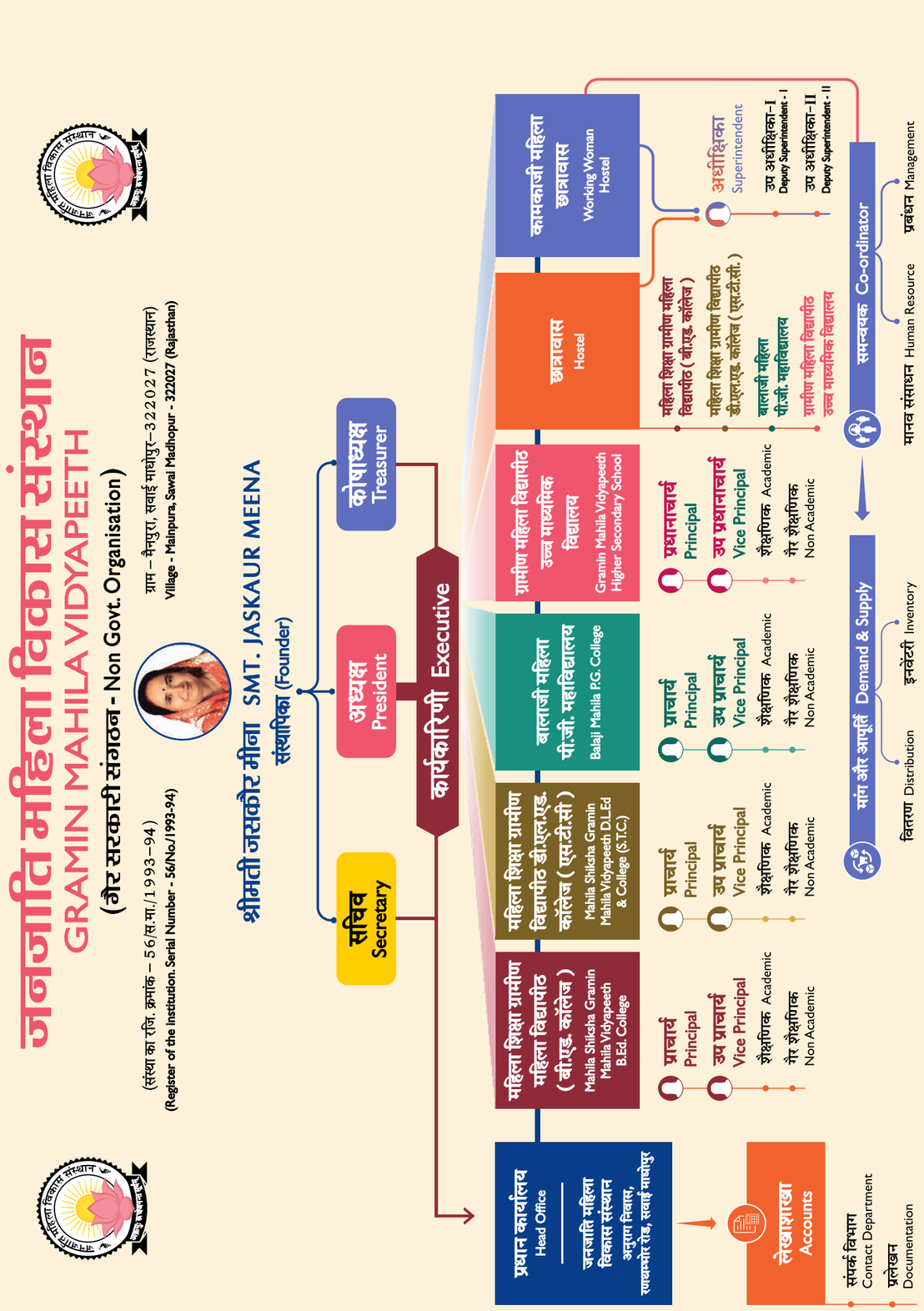


संगठनात्मक संरचना

# ग्रामीण महिला विद्यापीठ

## वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

### कक्षा- 10 वीं ( 2022-2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रियांशु साहू | श्री सीताराम साहू | 92.00 |
| 2 | रूचि कुमारी | श्री आनन्द प्रकाश | 88.00 |
| 3 | हर्षिता पटोना | श्री कमलेश पटोना | 87.33 |

### कक्षा- 12 वीं ( विज्ञान वर्ग 2022-2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | आशा मीना | श्री कन्हैया लाल मीना | 92.00 |
| 2 | मनीषा मीना | श्री अजय कुमार मीना | 88.80 |
| 3 | कविता मीना | श्री रामकेश मीना | 87.00 |

### कक्षा- 12 वीं ( कला वर्ग 2022-2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | कोमल मीना | श्री मनराज मीना | 91.20 |
| 2 | प्रिया मीना | श्री मुकेश चन्द मीना | 91.00 |
| 3 | हर्षिता जांगिड़ | श्री महेश कुमार शर्मा | 86.60 |

## खेलकूद, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अन्य वार्षिक गतिविधियाँ

### चम्मच दौड़ — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| लक्ष्मी शर्मा | श्री मदन लाल शर्मा | VI | प्रभास सदन | प्रथम स्थान |
| अनुष्का मीना | श्री तेजराम मीना | VI | प्रकृति सदन | द्वितीय स्थान |
| मीनाक्षी खंगार | श्री पप्पूलाल खंगार | VII | प्रभात सदन | तृतीय स्थान |

### खो-खो — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| कीर्ति, ज्योति, कृष्णा, नरगिस, प्रिति | | | प्रभात सदन | प्रथम स्थान |

### कबड्डी प्रतियोगिता — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| अंजु, कृष्णा, पूजा, मोनिका, ज्योति | | | | प्रथम स्थान |

### जलेबी कुद — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| मिताली राज | श्री राजेश मीना | IV | प्रभात सदन | प्रथम स्थान |
| सुहाना कुमारी | श्री सतवीर सिंह | VI | प्रकृति सदन | द्वितीय स्थान |
| रितु मीना | श्री रमेश मीना | VII | प्रभास सदन | तृतीय स्थान |

### निबन्ध प्रतियोगिता — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| कृष्णा मीना | श्री रामदयाल मीना | XII | प्रभात सदन | प्रथम स्थान |
| अन्तिमा मीना | श्री मोलेश मीना | XI | प्रभास सदन | द्वितीय स्थान |
| तनिषा प्रजापत | कमलेश कुम्हार | XI | प्रकाश सदन | तृतीय स्थान |

### पत्र लेखन — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| आकांक्षा गुर्जर | श्री सम्पत लाल गुर्जर | X | प्रकृति सदन | प्रथम स्थान |
| हर्षिता पटोना | श्री कमलेश पटोना | XI | प्रकाश सदन | द्वितीय स्थान |
| आशा मीना | श्री मुकेश कुमार मीना | VI | प्रभात सदन | तृतीय स्थान |

### कविता लेखन — सत्र 2022-23

| विजेता का नाम | पिता का नाम | कक्षा | सदन | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| रूचि कुमारी मोर्दिया | श्री आनन्द प्रकाश | XI | प्रभात सदन | प्रथम स्थान |
| कविता मीना | श्री इन्द्रराज मीना | XII | प्रयास सदन | द्वितीय स्थान |
| संजना मीना | श्री बाबूलाल मीना | XII | प्रकाश सदन | तृतीय स्थान |

# भविष्य की उड़ान

द्वारा

## श्री सुरेश कुमार ओला

जिलाधीश

सवाईमाधोपुर

संकलन एवं प्रकाशन
– श्रीमती रचना मीना
(निदेशक)

जिलाधीश श्री सुरेश कुमार ओला जी को
उनके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते
हुए निदेशक श्रीमती रचना मीना

सौजन्य से

**जनजाति महिला विकास संस्थान**

# भविष्य की उड़ान

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **एक संवाद** | - | **देश की युवा शक्ति से** | **एक मार्गदर्शन** | - | **भविष्य की उड़ान का** |
| **एक उद्देश्य** | - | **प्रगति का** | **एक जागृति** | - | **इच्छाशक्ति की** |
| **एक स्वप्न** | - | **सफलता का** | **एक दृढ़निश्चय** | - | **सही दिशा में परिश्रम का** |

प्रिय बालिकाओं,

ऊँची उड़ान को सुदृढ़ पंखों से भी कहीं ज्यादा सुदृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। उस इच्छाशक्ति को जगाने के लिये हमें चाहिये होता है सही मार्गदर्शन, सार्थक सहयोग एवं उनके अनुभवों का लाभ जो स्वयं उस ऊँचाई तक अपने परिश्रम, तपस्या व त्याग के बल पर पहुंचे होते हैं।

''भविष्य की उडान'' कार्यक्रम का आयोजन एक ऐसी ही पहल है जो विभिन्न क्षेत्रों में भविष्य में सरकारी व गैरसरकारी नौकरी पाने का सपना देखने वाले छात्र–छात्राओं एवं युवाओं के हितों को ध्यान में रख कर किया गया है।

कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने व आयोजित करने में शिक्षा विभाग के सहयोग से कमान हाथ में ली है राजस्थान की मिट्टी से जुडे और दूरदर्शी सोच रखने वाले हमारे जिला सवाई माधोपुर के कलेक्टर महोदय श्री सुरेश कुमार ओला जी ने। उन्होने यह साबित किया है कि जो कुछ आपके अनुभवों ने आपको सिखाया है वह यदि पूर्ण ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं परोपकार की भावना से औरों के साथ बांटा जाऐ तो ना जाने कितने व्यक्तियों के भविष्य को संवारा जा सकता है और देश के युवाओं के मार्ग को सरल और सुगम किया जा सकता है।

उनके द्वारा दिया गया ''भविष्य की उड़ान'' कार्यक्रम के अन्तर्गत यह मार्गदर्शन सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। ये वे मोती हैं जिनको पिरो कर, सहेज कर रखना आवश्यक हैं। चूंकि यही वह धन है जो आपके लिये जीवन पर्यन्त पूंजी के रूप में रहेगा।

इसी धारणा से उनके द्वारा जब ग्रामीण महिला विद्यापीठ में भविष्य की उड़ान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, तब मुझे आभास हुआ कि माननीय जिलाधीश महोदय द्वारा प्रस्तुत विचार एवं मार्गदर्शन के बिंदुओं का संकलन आवश्यक है। ताकि जो बच्चे इस कार्यक्रम में भाग लेने से वंचित रह गए उन तक भी इनका लाभ इस पत्रक के माध्यम से पहुंच सके।

आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ

**रचना मीना**
निदेशक
ग्रामीण महिला विद्यापीठ
मैनपुरा, सवाई माधोपुर

1. **सर्वप्रथम उद्देश्य** – अत्यन्त आवश्यक हैं कि आपके समक्ष आपका उद्देश्य स्पष्ट हो। उद्देश्य को ले कर असमंजस की स्थिती आपकी सफलता में सबसे बडी बाधा साबित होगी और आप अपना ध्यान प्रारम्भ से ही केन्द्रित नहीं कर पाऐंगे अतः अपना उद्देश्य व लक्ष्य निर्धारित करें।

2. **कार्य योजना** – उद्देश्य के निर्धारित होते ही आपको सर्वप्रथम अपनी एक कार्ययोजना बनानी आवश्यक है कि आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये किस प्रकार आगे बढोगे। एक ''माइंड मैप'' आपको समय बचाने और उसका सही उपयोग करने के लिये मार्गदर्शित करेगा।

3. **प्राइमरी योजना** – आवश्यक नहीं की आप अपने लक्ष्य के लिये अन्तिम सोपान तक का समय प्लान करे आप एक तात्कालिक योजना भी बना सकते हैं। पहले आप जब उस योजना पर अमल करना प्रारम्भ करेंगे तो आगे का रास्ता स्पष्ठ होना प्रारम्भ हो पाऐगा।

4. **Backup (सुरक्षा योजना)** – आप अपने लक्ष्य की ओर सौ प्रतिशत निष्ठा से आगे बढ़े किन्तु स्वयं को चारों ओर से निश्चित रखने के लिये एक वैकल्पिक योजना अवश्य तैयार रखें। किसी भी विषम परिस्थिती में आपकी यह वैकल्पिक रोजगार के लिये तैयार रहने की प्रवृति आपको निराश होने से बचाऐगी।

5. **भविष्य की योजना के अनुसार समय संयोजन** – आपने भविष्य के लिये जो भी लक्ष्य निर्धारित किया है उससे सम्बन्धित प्रतियोगी परिक्षायों की समय सारणी के अनुसार व किस वर्ष में आप वह परीक्षा देने की न्यूनतम सीमाओं को पूरा कर पूर्ण तैयारी के साथ उसमें बैठ पाऐंगे के मापदण्ड पर अपने समय को नियोजित करे।

6. **टाइम टेबल** – पढाई के लिये स्वयं को एक सही टाइमटेबल के अनुसार चलाऐं। आप का टाइमटेबल वास्तविक धरातल पर सही ढंग से क्रियान्वित हो सकेगा या नहीं यह सुनिश्चित करें। अति उत्साह में ऐसा समय निर्धारण ना करें जो आप पूरा ना कर सकें अन्यथा आप स्वयं अवसाद की स्थिती में आऐंगे और धीरे धीरे आपका उत्साह कम होता जाएगा। छोटे छोटे लक्ष्य बना कर उन्हें पूरा करें और आप देखेंगे की जल्द ही आप बडे लक्ष्य भी पूरे कर पा रहे हैं।

7. **समय सबसे बडा संसाधन है** – सभी के लिये, चाहे वह गरीब हो या अमीर एक संसाधन समान रूप से प्राप्त है और वो है 'समय'। आपके पास उतना ही समय है जितना देश है प्रधानमंत्री के पास पूरे 24 घन्टे। सफलता और असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन 24 घन्टों का सदुपयोग पूर्ण ईमानदारी के साथ कैसे किया जाता है। आज का कार्य कल पर और कल का कार्य परसों पर टाल कर आप स्वयं के साथ धोखा ना करें। आपको स्वयं पर एक निरीक्षक की नजर रखनी होगी कि कही आप स्वयं से झूठ तो नहीं बोल रहे है? स्वयं से धोखा तो नहीं कर रहे है? क्यू कि ऐसा करके आप समय रूपी बहुमूल्य संसाधन का सही इस्तेमाल नहीं कर रहे होते है और यही से आपकी सफलता की संभावनाऐं क्षीण होती जाती है।

8. **स्वयं की कमियों को पहचानें** – अपने सबसे बड़े आलोचक आप स्वयं बनें। यदि आप ये मानते हैं कि आप सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं तो यकीन मानिये कि स्वयं के रास्ते की सबसे बडी बाधा आप स्वयं हैं। स्वयं का, अपनी शक्ति का ओर अपनी कमजोरी का निष्पक्ष आंकलन करें उससे आप अपनी ताकत का सही इस्तेमाल और अपनी कमियों को पहचान कर उनमें सुधार करने का सही तरीका अवश्य ढूंढ लेंगे। जैसे ही आप स्वयं को श्रेष्ठ मान लेते हैं वैसे ही आपके प्रयासों में गम्भीरता समाप्त हो जाती है अतः निरन्तर सबसे सीखते रहें।

9. **मां, दादी, नानी से सीखें** – आप यदि ध्यान देंगे तो पाऐंगे की हमारे घर में हमारी मां, दादी, नानी व अन्य बडे सदस्य वर्षो से एक ही काम को प्रतिदिन करते है और उनके इन्हीं छोटे छोटे कामों को नियमित करने से हमारी जीवनचर्या सुचारू रूप से निरंतर चलती रहती है। हमें यही निरंतरता उनसे सीखनी चाहिये। साथ ही यह भी अपने जीवन में उतारना चाहिये कि यदि उन कामों को करने के लिये कुछ समय पश्चात हमें मदद भी मिले और स्वयं हमारे करने की आवश्यकता ना रह जाऐ तब भी उसी समर्पण के साथ हमें छोटे छोटे काम स्वयं निपटा कर अपनी निर्भरता दूसरों पर कम से कम रखनी चाहिये। इससे हमारा समय भी बचेगा और काम वैसे सम्पूर्ण होगा जैसा कि हम चाहते हैं।

10. **आपके 10वीं व 12वीं के नम्बर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये मायने नहीं रखते** – ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जिनमें 10वीं व 12वीं में प्रथम श्रेणी ना ला पाने वाले विद्यार्थी भी उच्च सरकारी व गैर सरकारी पदों तक पहुंचे हैं। यह साबित करता है कि आप जब से चाहें तब से अपनी सफलता की यात्रा प्रारंभ कर सकते हैं। जो शिक्षक गण आपको प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाते हैं वे स्वयं उन पदों पर नहीं होते किन्तु आपकों श्रेष्ठतम मार्ग बताते हैं। यही इस बात का परिचायक है कि आपकी एक सही दिशा में की गई मेहनत मायने रखती है। जिस दिन से आप सही मार्ग पर चलने लगते हैं उस दिन से अपनी यात्रा की शुरूआत मानिये। अपनी पिछली मार्कशीट्स देख कर हतोत्साहित होने या अपने लक्ष्य छोटे कर लेने की आवश्यकता नहीं है।

11. **नोट्स बनाऐं** – अपने टाईमटेबल के अनुसार विषयों को निर्धारित समय देते हुऐ प्रारम्भ में अपना कुछ समय व्यवस्थित नोट्स तैयार करने में लगाऐं। स्वयं का पढा व लिखा हुआ आपको बहुत अच्छी प्रकार से याद होगा। और परीक्षाओं के समीप आने पर ये नोट्स ही आपके सबसे अधिक काम आऐंगे।

12. **आपकी योजनाबद्ध तैयारी आवश्यक है** – आप अपनी तैयारी का माइंड मैप अवश्य बनाऐं। समय सीमा निर्धारित करें क्यूंकि योजनाबद्ध तैयारी के बिना सफलता संभव नहीं। इसके लिये निम्न बिन्दु आवश्यक हैः–

    - **विषयों का चयन** : आप जब अपनी कमियां और अपनी ताकत दोनों को समझ जाते हैं तो उनके अनुसार विषयों का सही चुनाव करें यह बहुत महत्वपूर्ण है। विषय वे ले जिन पर आपकी पकड़ मजबूत हो।
    - **विषयों में टॉपिक व प्रश्नों का चयन** : आपके द्वारा चयनित विषय मे कौनसे टॉपिक आपको चयनित करने हैं व उनमें कितने प्रश्न बनते है यह सब प्रारंभ में ही व्यवस्थित रूप से नोट कर लें।
    - **कितना समय किस विषय पर देना है** : आपके टाईम टेबल में स्पष्ट करें कि आपको कितना समय किस विषय के लिये देना आवश्यक हैं उसमें किस किस टॉपिक पर कितना समय लगेगा यह भी दिमाग में रखें।
    - **प्रतियोगी परीक्षा में निर्धारित मापदण्डों को समझे** : प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षा के मापदण्ड व नियम प्रथक–प्रथक होते हैं। किसी के कहने पर ना जाऐं और स्वयं यह भली प्रकार समझें कि परीक्षा में आपका आंकलन किन किन आधारों पर होगा और किस प्रकार होगा। आपकी थोडी सी चूक या आपको परीक्षा प्रणाली का पूर्ण ज्ञान ना होना आपको असफलता के मार्ग पर ले जा सकता है।
    - **Early Start (जल्दी शुरूआत करें)** : आपको यह नहीं मानना है कि अभी तो मुझे साल दो साल बाद परीक्षा देनी है तो तैयारी की शुरूआत इतनी जल्दी क्यूं करूं? आप जितनी जल्दी तैयारी करेंगे और सही रास्ता पकडेंगे उतना ही आप अपने लक्ष्य मे और स्वयं के बीच में दूरी को कम करते जाऐंगे। इसमें ''काल करे सो आज कर, आज करें सो अब'' की धारणा अपनानी है।
    - **स्लेबस को समझे** : एक वो चीज जो आपको किताब शुरू करने से पहले पढ़नी है वह है स्लेबस। स्लेबस आपको याद होना अत्यन्त आवश्यक है। आपके मन–मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिये की आप को क्या, कब और कैसे पढ़ना है। यह आपका समय व ऊर्जा दोनों की बचत करेगा।
    - **ग्रुप स्टडी करे** : अकेले पढाई करे किन्तु पढाई की समरसता एवं स्वयं का किसी अन्य के प्ररिप्रेक्ष्य में सटीक आंकलन ना कर पाना आपकी गति को शिथिल करेगा। उसका सबसे अच्छा उपाय है सम्मिलित रूप से एक ग्रुप बना कर पढना। यकीन मानिये आपको जितना ग्रुप स्टडी में सीखने को मिलता है वह दुर्लभ है। आप निरंतर स्वयं को तोलते रहते हैं और एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आपको मिलती रहती है।
    - **ग्रुप डिस्कशन (सामुहिक चर्चा)** : ग्रुप स्टडी मे आपको टॉपिक्स पर ग्रुप डिस्कशन करने का जो मौका मिलता है उससे आप भिन्न भिन्न दृष्टिकोण से अलग अलग परिप्रेक्ष्य में विषयों पर मंथन करते हैं जो आपकी तार्किक शक्ति व बौद्धिक स्तर को ना केवल बढाता है बल्कि आपको साक्षात्कारों मे प्रश्नों का सामना करने का आत्मविश्वास भी प्रदान करता है।
    - **पठन–पाठन (Reading)** : रीडिंग की आदत आपकी सबसे बडी मित्र है। विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं, अलग अलग अवधारणा रखने वाले लेखकों की पुस्तकें आदि पढ़ने का समय आपके टाईमटेबल में हमेशा होना चाहियें। ''पुस्तकें आपकी सबसे अच्छी मित्र है'' यह केवल एक वाक्य नहीं अपितु जीवन दर्शन है। किताबों को पढ़ने की आदत के बिना आप अपने विचारों को विस्तार नहीं दे सकते।
    - **लाइब्रेरी** : लाइब्रेरी का उपयोग एक बेहद अहम कार्य है। लाइब्रेरी में बैठ कर पढने की आदत आपकी समय बद्धता ओर संसाधनों के सदुपयोग की आदत में बढोतरी करेगी। लाइब्रेरी कल्चर ग्रुप स्टडी, ग्रुपडिस्कशन, नोट्स मेकिंग आदि के कार्यो में सबसे अधिक सहयोग करता है। आपको विभिन्न विषयों से सम्बन्धित, व्यवस्थित जानकारी सरलता से उपलब्ध होती है और साथ ही आपको पढाई का और विषयों से सम्बन्धित रिसर्च का एक सकारात्मक माहौल मिलता है।

13. **सतत् प्रयास व निरंतरता बेहद जरूरी** – अपने आपको कभी हतोत्साहित ना होने दें किसी भी कार्य को परिणाम तक पहुंचाने के लिये सतत् प्रयासों की आवश्यकता होती है और प्रयास निरन्तर किया जाऐ तो ही फलीभूत होता हैं। स्वयं के उत्साह को कभी कम ना होने दें अपने आपको हमेशा अपना लक्ष्य याद दिलाते रहें ओर याद दिलाते रहें की लक्ष्य को ले कर आपके क्या सपने हैं और आपका क्या उद्देश्य है।

14. **किताबों की व्यवस्था / उपलब्धता व खर्च** – अपने आपको कभी यह बहाना ना बनाने दे कि सम्बन्धित विषयों की किताबें बहुत महंगी है या उपलब्ध नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि किताबों पर आपका खर्च पांच से दस हजार रूपये तक होता है जिनकी उपलब्धता लाइब्रेरी में या ऑनलाइन या सैकण्ड हैंड बुक्स के रूप में रहती है। इस संबंध में आप मदद मांगने से स्वयं को ना रोकें। निश्चित रूप से आपको ये पुस्तकें उपलब्ध हो ही जाऐंगी यदि आप में वह दृढइच्छाशक्ति है तो। अतः इसका बहाना बना कर सहानुभूति ना लें।

15. **Be unstoppable (निरंतर सुधार लाऐं)** – स्वयं में निरंतर सुधार करते जाइये। खुद का सटीक आंकलन करे ओर फिर जहां कमी दिखाई दे उसे सुधारने का प्रयास करें। यही सफलता प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है।

16. **कक्षाओं तक सीमित ना रहें** – एक विद्यार्थी के रूप में स्वयं को केवल कक्षाओं तक सीमित ना रखें। निश्चित कर ले कि आपको क्या करना है और उसमें चौतरफा जुट जाऐ। ज्ञान अर्जन हर स्थान और हर अवसर पर करने से ना चूंके।

17. **अपनी पठाई के लिये बैठक का समय धीरे धीरे बढाते जाऐं** – कोई भी व्यक्ति लगातार आठ घंटे से दस घंटे पढ सकता हो यह आवश्यक नहीं। आप धीरे धीरे अपनी सिटिंग कैपेसिटी बढाऐं अपनी रीडिंग की आदत को भी बढाते जाऐ। ध्यान दे कि कितने घंटे आप एकाग्रचित्त बैठ सकते हैं। समय समय पर मैडीटेशन, कसरत व खेलों का सहारा लें। ध्यान रखें की एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। समय पर खाऐं और पूरी नींद लें।

18. **आत्मविश्वास बढाऐं** – आपको स्वयं में आत्मविश्वास की लौ जलानी है। आप खुद को ना ही तो सर्वज्ञाता समझें ओर ना ही किसी से कम। स्वयं में लाऐं हुऐ सकारात्मक बदलावों का स्वयं आंकलन करें। स्वयं में इच्छाशक्ति की आग को लगातार जलाऐ रखें। खुद को सोचने पर मजबूर करें कि आपमें कहां कमी है और यदि है तो उसे कैसे दूर करते जाना है।

19. **डायरी बनाऐं** – सीखना और लगातार खुद में सकारात्मक बदलाव लाना व्यक्तित्व निर्माण की सीढी है अतः हर विद्यार्थी को अपने कार्यो का डॉक्यूमेंटेशन करना आवश्यक हैं। आने लक्ष्य को लिखें समय सारणी को लिखे ओर उनके माध्यम से अपनी प्रगति को समझें।

20. **मॉक टेस्ट** – अवलोकन– मॉक टेस्ट द्वारा अपनी प्रगति को जाँचने परखने के लिये निरंतर मॉक टेस्ट दें। परिणामों का अवलोकन करें, अपनी गलतियों को पुनः तैयारी के साथ सुधारने का प्रयास करें ओर पुनः मॉक टेस्ट दें। यह प्रक्रिया निरंतर जारी रखें जिससे आपमें निरन्तर सुधार होगा ओर निःसंदेह आप हमेशा पहले से बेहतर कर पाऐंगे।

21. **अपने जूनियर से सीखें** – सीखने की जिस प्रकार कोई उम्र नहीं होती वैसे ही हमें स्मरण रखना चाहिये कि सिखाने वाले की भी कोई उम्र नहीं होती। हमें सीखने के लिये तत्पर रहना है किन्तु हर उस व्यक्ति से जो हमें कुछ सिखा सकता है। सीखने के लिये स्वयं आगे बढें चाहे वो व्यक्ति आपसे कम पढा लिखा, आपका जूनियर और आपसे उम्र में छोटा ही क्यूं ना हो। स्वयं को सीखने के लिये सदैव चैतन्य रखे।

22. **विचारों में जंग ना लगने दें** – वैचारिक भिन्नता हर स्थान पर मिल सकती है किन्तु विभिन्न परिप्रेक्ष्य में होने वाले मंथन को हमेशा सकारात्मक रूप से लेना सीखें। तर्क ओर लडाई में एक बारीक सा फर्क होता है। तर्क में दोनों पक्ष एक दूसरे से सुनते हैं ओर इसका विश्लेषण करते हैं किन्तु जब आप दूसरे पक्ष को सुनना ही ना चाहे तो वह लडाई है। एक विद्यार्थी के तौर पर आपको अपने दिमाग को जंग लगने से और एक स्थान पर ठहर जाने से बचाना होगा। अतः विश्व स्तर की सोच बनाऐं और अपने विचारों को और समाधान के तरीकों को विस्तार दें।

23. **संघर्ष** – एक कहावत है कि ''यदि आपको किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ रहा तो निश्चित मान लें कि आप सही रास्ते पर नहीं है''

    संघर्ष जीवन की सबसे बडी सच्चाई है। आज तक ऐसा कोई महान व्यक्ति नहीं हुआ जिसे किसी ना किसी रूप में कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा। आप संघर्ष से कतई ना डरें। यही संघर्ष जो अलग अलग रूप में सभी के समक्ष आता है आपको जीवन की सही दिशा व आपके लक्ष्य की ओर ले जाता है। उन सभी लोगों की जीवनी पढे जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य से नहीं भटके ओर सफल हुऐ।

    श्री भंवरलाल बायतू, श्री गोविंद जायसवाल आदि वे नाम है जो न्यूनतम संसाधनों और अधिकतम कठिनाइयों के बाद भी आज अपने प्रशासनिक सेवाओं में आने के स्वप्न को साकार कर पाऐं।

24. **व्हाट्सेप ग्रुप्स से जुड़े** – ऐसे विभिन्न व्हाट्सेप ग्रुप हैं जिनमें प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी कर रहे युवा शामिल हैं ओर साथ ही उनमे प्रशासनिक अधिकारीगण, शिक्षा विभाग के अधिकारी गण व अन्य मार्गदर्शक व्यक्ति जुडे हुऐ है। आप स्वयं को इस प्रकार के समूहों से जोड़े ताकि समय – समय पर आपकी सहायता की जा सकें।

25. **तीन 'स' याद रखें**

    **समर्पण (Dedication)**

    **संसाधन (Resources)**

    **संतुलन (Alignment)**

- **समर्पण** : आपमें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण भाव का होना बहुत आवश्यक है। जीवन के क्षणिक सुखों की ओर लालायित होना जैसे छुट्टीयां अनावश्यक रूप से करना, आज का कार्य कल पर टाल देना, समय सीमा के अनुसार काम ना करना, आपकों पीछे धकेल सकता है।
- **संसाधन** : अपने पास उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग करना सुनिश्चित करें ओर आप पाऐंगे की आपको किसी चीज की कोई कमी नहीं है।
- **संतुलन** : जीवन मे हर चीज का संतुलन बनाऐं। पढ़ाई के समय पढाई व आराम के समय आराम और मनोरंजन के समय मनोरंजन। एक विद्यार्थी के लिये यह संतुलन अत्यन्त आवश्यक है। अध्ययन ओर उस मार्ग पर चलकर लक्ष्य प्राप्त करना एक तपस्या है अतः अपने अंदर स्वनियंत्रण की परिपक्वता लाऐं। जीवन संतुलन का ही दूसरा नाम है।

26. **जिला प्रशासन आपके साथ** –''भविष्य की उड़ान'' कार्यक्रम की रूपरेखा आप सभी युवाओं व विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाई गई है ताकि विभिन्न स्तरों पर होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये आप की सहायता की जा सके। समय समय पर इन संगोष्ठियों का आयोजन विभिन्न स्कूल, कॉलेजों में किया जाता है। जिला प्रशासन हर कदम पर आपके साथ खड़ा है अतः मार्गदर्शन व सहयोग मांगने में कभी ना झिझकें। हम सदैव आपके साथ है और आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

**श्री सुरेश कुमार ओला**
जिलाधीश
सवाई माधोपुर





## इस वर्ष संस्था में बालिकाओं की कुल संख्या

| संस्था का नाम | छात्राओं की संख्या / वर्ष 2023 |
|---|---|
| ग्रामीण महिला विद्यापीठ | 348 |
| बालाजी महिला पी.जी. महाविद्यालय | 272 |
| महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ बी.एड़. कॉलेज | 100 |
| महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ डी.एल.एड़. कॉलेज | 100 |
| छात्रावास | 174 |
| कामकाजी महिला छात्रावास | 4 |

# बालाजी महिला पी. जी. महाविद्यालय

## वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

### बी.ए. तृतीय वर्ष ( 2022–2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | जसकौर मीना | श्री हरगोविन्द मीना | 67.44 |

### एम. ए. भूगोल ( 2022–2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | रामकला बाई मीना | श्री घनश्याम मीना | 77.00 |

### एम. ए. हिंदी ( 2022–2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अर्चना कुमारी जाट | श्री श्याम लाल जाट | 72.50 |

## काली बाई भील स्कूटी योजना पुरस्कार

हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो,
मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बनें
' शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। '

– स्वामी विवेकानंद

# महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ बी.एड़. कॉलेज

## वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

### बी. एड. प्रथम वर्ष ( 2022-2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | मंजूलता मीना | श्री पुखराज मीना | 81.85 |
| 2 | शिवानी मीना | श्री रोशन लाल | 81.42 |
| 3 | शिवानी शर्मा | श्री राजेश कुमार शर्मा | 80.85 |

### बी. एड. द्वितीय वर्ष ( 2022-2023 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अंकिता परसोया | श्री सुवालाल परसोया | 80.35 |
| 2 | चंचल कुमारी शर्मा | श्री ओमप्रकाश शर्मा | 79.71 |
| 3 | वन्दना मीना | श्री बी.डी. मीना | 79.05 |

# महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ डी.एल.एड़. कॉलेज

## वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

### बी.एस.टी.सी. प्रथम वर्ष ( 2021-2022 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अंजली क्षोत्रिय | श्री जगदीश श्रोत्रिय | 87.50 |
| 2 | शर्मिला स्वामी | श्री मंगला राम | 87.20 |
| 3 | मनीषा कुमारी गंधार | श्री सतानन्द गंधार | 86.40 |

### बी.एस.टी.सी. द्वितीय वर्ष ( 2021-2022 )

| क्र.सं. | छात्रा का नाम | पिता का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | किरण महावर | श्री गोपाल महावर | 88.50 |
| 2 | तनीषा सोनी | श्री ओमप्रकाश सोनी | 88.20 |
| 3 | अर्चना | श्री सुरेन्द्र कुमार | 87.87 |

""The function of education is to teach one to think intensively
and to think critically. Intelligence plus character -
that is the goal of true education ."

- Martin Luther King jr.

**संस्थापिका की कलम से...**

आदरणीय बंधु,

मनुष्य पुरातन परम्परा प्रिय है, अनुकरणशील है, किन्तु यदि वह नया पग उठाये तो अपने अन्तर से ही नया सूर्य पैदा कर सकता है, अनुगामी न बनकर अग्रणी बनने की क्षमता रखता है, वह भाव ऋग्वेद के इस श्लोक से और स्पष्ट हो जाते है।

**''अनुप्रत्नाश आयवः पदं नवीयो। अक्रमुःरूचेजनन्त सूर्यम्।।''**

बालिका शिक्षा के विस्तार का लक्ष्य मेरे जीवन का संकल्प है।
भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ, अज्ञान के विरूद्ध इस संघर्ष में, ज्ञान का कवच धारण करने हेतु विद्यालय संचालन में सर्व समाज का सहयोग अपेक्षित है।

**अभिनन्दन एवं धन्यवाद**

**संस्थापिका**

**जसकौर मीणा**

कार्यकारिणी सदस्यों की नियमित मीटिंग

स्थानीय ग्रामवासियों के साथ कार्यकारिणी सदस्यों की चर्चा

## संस्था के मुख्य दूरभाष नम्बर

- निदेशक कार्यालय – 9461462222
- **बालाजी महिला पी.जी. महाविद्यालय**
  प्राचार्य – मो. 97851 21277
  फोन – 07462-253044
- **ग्रामीण महिला विद्यापीठ उच्च माध्यमिक विद्यालय**
  प्राधानाचार्य – मो. 98876 41704
  फोन – 07462-253009

## ऑफिस व लेखाशाखा के मुख्य दूरभाष नम्बर

- लेखाकार – मो. 9460950825
- लेखा शाखा – मो. 94609 50825
- मुख्य समन्वयक – मो. 88009 25249
- छात्रावास अधीक्षक – मो. 6376798503

ग्रामीण महिला विद्यापीठ
उच्च माध्यमिक विद्यालय

बालाजी महिला पी.जी.
महाविद्यालय ( बी.ए. )

बालाजी महिला पी.जी.
महाविद्यालय ( एम.ए. )

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ
बी.एड. कॉलेज

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ
डी.एल.एड. ( एस.टी. सी. ) कॉलेज

छात्रावास परिधान


ग्राम – मैनपुरा, सवाई माधोपुर-322027 ( राजस्थान )

gmvswm@gmail.com
www.gmvswm.com
facebook.com/GMVswm
instagram.com/gmvswm